Sankat Nashan Ganesh Stotram- संपूर्ण संस्कृत पाठ

श्री गणेशाय नमः

नारद उवाच ।

श्लोक 1

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुःकामार्थसिद्धये ॥१॥

Transliteration:

Pranamya Shirasa Devam Gauriputram Vinayakam |
Bhaktavasam Smarennityam Ayuh-Kamartha-Siddhaye ||1||

श्लोक 2

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥२॥

Transliteration:

Prathamam Vakratundam Ca Ekadantam Dvitiiyakam |
Tritiiyam Krishnapingaksham Gajavaktram Chaturthakam ||2||

श्लोक 3

लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ॥३॥

Transliteration:

Lambodaram Panchamam Ca Shashtham Vikattam-Eva Ca |
Saptamam Vighnarajam Ca Dhumravarnam Tathashtamam ||3||

श्लोक 4

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥४॥

Transliteration:

Navamam Bhalachandram Ca Dashamam Tu Vinayakam |
Ekadasham Ganapatim Dvadasham Tu Gajananam ||4||

श्लोक 5

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिश्च जायते ॥५॥

Transliteration:

Dvadashai-Taani Namaani Trisandhyam Yah Pathennaarah |
Na Ca Vighnabhayam Tasya Sarvasiddhishca Jaayate ||5||

श्लोक 6

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥६॥

Transliteration:

Vidyaarthii Labhate Vidyaam Dhanaarthii Labhate Dhanam |
Putraarthii Labhate Putraan-Mokshaarthii Labhate Gatim ||6||

श्लोक 7

जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥७॥

Transliteration:

Japed Ganapatistotram Shadbhir-Maasaih Phalam Labhet |
Samvatsarena Siddhim Ca Labhate Naatra Samshayah ||7||

श्लोक 8

अष्टाभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥८॥

Transliteration:

Ashtaabhyo Brahmanebhyashca Likhitva Yah Samarpayet |
Tasya Vidya Bhavetsarva Ganeshasya Prasaadatah ||8||

॥ इति श्रीनारदपुराणे संकटनाशनं गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Sankat Nashan Ganesh Stotram In Hindi- **अर्थ सहित**

श्लोक 1 का अर्थ

मैं सिर नवाकर उन देवाधिदेव गौरीनंदन विनायक को प्रणाम करता हूं, जो भक्तों के हृदय में निवास करते हैं। मैं प्रतिदिन उनका स्मरण करता हूं जिससे दीर्घायु, स्वास्थ्य, मनोकामनाओं की पूर्ति और जीवन के लक्ष्य की सिद्धि हो।

श्लोक 2 का अर्थ

भगवान गणेश के बारह नाम इस प्रकार हैं: प्रथम **वक्रतुण्ड** (टेढ़ी सूंड वाले), द्वितीय **एकदन्त** (एक दांत वाले), तृतीय **कृष्णपिङ्गाक्ष** (श्यामल-भूरी आंखों वाले), चतुर्थ **गजवक्त्र** (हाथी के मुख वाले)।

श्लोक 3 का अर्थ

पंचम नाम **लम्बोदर** (विशाल उदर वाले), षष्ठ नाम **विकट** (विशाल देहधारी), सप्तम नाम **विघ्नराज** (विघ्नों के स्वामी) और अष्टम नाम **धूम्रवर्ण** (धुएं के समान रंग वाले)।

श्लोक 4 का अर्थ

नवम नाम **भालचन्द्र** (मस्तक पर चंद्रमा धारण करने वाले), दशम नाम **विनायक** (विघ्नों को दूर करने वाले), एकादश नाम **गणपति** (गणों के स्वामी) और द्वादश नाम **गजानन** (गज-मुख वाले)।

श्लोक 5 का अर्थ

जो मनुष्य इन बारह नामों को तीनों संध्याओं यानी प्रातःकाल, मध्याह्न और संध्याकाल में पढ़ता है, उसे कभी विघ्न और भय नहीं आता और उसे समस्त सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

श्लोक 6 का अर्थ

विद्या चाहने वाले को विद्या मिलती है, धन चाहने वाले को धन मिलता है, पुत्र की इच्छा रखने वाले को पुत्र की प्राप्ति होती है, और मोक्ष चाहने वाले को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

श्लोक 7 का अर्थ

जो भक्त इस गणपति स्तोत्र का नियमित जप करता है, उसे छह महीने में फल मिलने लगता है। और एक वर्ष तक नियमित पाठ करने पर सिद्धि प्राप्त होती है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

श्लोक 8 का अर्थ

जो व्यक्ति इस स्तोत्र को लिखकर आठ ब्राह्मणों को समर्पित करता है, उसे भगवान गणेश की कृपा से समस्त प्रकार की विद्याएं प्राप्त होती हैं।

Sankat Nashan Ganesh Stotram का पाठ कब और कैसे करें

सर्वोत्तम समय

- **प्रातःकाल:** सूर्योदय से पूर्व ब्रह्ममुहूर्त में इस स्तोत्र का पाठ करना सर्वोत्तम माना जाता है।
- **त्रिसन्ध्य पाठ:** स्तोत्र में स्वयं कहा गया है कि तीनों संध्याओं यानी प्रात:, मध्याह्न और सायंकाल में पाठ करने से विघ्न-भय नहीं रहता।
- **संकष्टी चतुर्थी:** प्रत्येक माह की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को इस Ganesh Sankat Nashan Stotra का पाठ विशेष रूप से फलदायी होता है।
- **गणेश चतुर्थी:** भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को इस स्तोत्र का पाठ करने से गणेश जी की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

- **बुधवार:** बुधवार का दिन भगवान गणेश को समर्पित है, इस दिन इस स्तोत्र का पाठ विशेष लाभकारी है।

पाठ विधि

- स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
- गणेश जी की प्रतिमा या चित्र के समक्ष बैठें।
- धूप, दीप, लाल पुष्प और मोदक का भोग लगाएं।
- पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठें।
- एकाग्र मन से इस Sankat Nashan Ganesh Stotram का पाठ करें।
- पाठ के बाद गणेश जी को प्रणाम करें और अपनी मनोकामना प्रार्थना करें।

पाठ की संख्या

- सामान्य दिनों में एक बार पाठ भी पर्याप्त है।
- किसी विशेष कामना की सिद्धि के लिए इसे **11 बार** पढ़ें।
- यदि बड़े संकट का सामना कर रहे हों तो प्रतिदिन **21 बार** पाठ करें।
- छह माह तक नियमित पाठ करने से फल मिलना आरंभ होता है और एक वर्ष में सिद्धि प्राप्त होती है।